# हिन्दी साहित्य में वर्णित वृद्धजन:

## चित्रण, चुनौतियाँ और समाधान

संपादक

डॉ. बीना कुमारी नायर वी.जी

डॉ. महालक्ष्मी के

**हिन्दी साहित्य में वर्णित वृद्धजन:**
**चित्रण, चुनौतियाँ और समाधान**

संपादक:
डॉ. बीना कुमारी नायर वी जी
डॉ. महालक्ष्मी के

**Elderly in Hindi Literature: Depiction, Challenges, and Solutions**
Editors: **Dr Beena Kumari Nair V G & Dr Mahalakshmi K**

First Edition: August 2025
Pages: 226
Printed at Rathna Offset, Chennai
Cover Design & Layout: Vijayan, Creative Studio
ISBN: 978-81-977848-9-7

Price: Rs. **400/-**

Published by
CREATIVE STUDIO
571/2A, Anna Salai, Teynampet,
Chennai - 600 018
vijayanstudio@gmail.com
Cell: 9840275550

## अनुक्रमणिका


1. वृद्धावस्था में हरिहर काका का जीवन संघर्ष
   **- डॉ. मो.सहिदुल इस्लाम** ..... 17

2. आधुनिक हिन्दी कहानियों में चित्रित वृद्धावस्था
   **- डॉ. शाज़िया फरहाना. आई** ..... 23

3. ज्ञानरंजन कृत "पिता" कहानी में चित्रित वृद्ध की स्थिति
   **- डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवास** ..... 30

4. कृष्णा सोबती के उपन्यास समय सरगम में अनतर्निहित
   वृद्ध मन की गूँज **- डॉ. रविता भाटिया** ..... 37

5. साहित्य और लोककथाओं में वृद्धावस्था की छवि
   **- रजनी.एस** ..... 42

6. बुजुर्गों की उपेक्षा-एक बढ़ती हुई सामाजिक समस्या
   **- डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी** ..... 48

7. साहित्य और लोक कथाओं में वृद्धावस्था की छवि
   **- डा.के.एस. प्रणतार्तिहरन** ..... 53

8. साहित्य में वृद्धावस्था की छवि
   **- डॉ के पद्मिनी पीएचडी** ..... 57

9. साठोत्तरी कहानियों में चित्रित वृद्धों की समस्याएँ
   **- डॉ. सुनील पाटिल** ..... 62

10. आधुनिक समाज में बुजुर्गों की बदलती भूमिका
    **- डॉ. रामायण प्रसाद टण्डन** ..... 66

11. गोविंदमिश्र कृत 'शाम की झिलमिल' उपन्यास में चित्रित बुजुर्गों
    की बदलती दुनिया **- बी. कमला** ..... 69

12. बुजुर्गों के प्रति संवेदनशीलता: एक सामाजिक चेतावनी
    **- डॉ.ई.अनुराधा** ..... 75

# ज्ञानरंजन कृत "पिता" कहानी में चित्रित वृद्ध की स्थिति

**डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवास**
विभागाध्यक्ष
वेल्स विश्व विद्यालय, चेन्नै

**प्रस्तावना**

"न वृद्धस्य शरीरबलं प्रधानं, अनुभवविज्ञानं तु तस्य बलं।"

अर्थात, वृद्ध व्यक्ति की शक्ति उसके शरीर में नहीं, बल्कि उसके अनुभव और ज्ञान में निहित होती है। भारतीय समाज में सदियों से वृद्धजनों को ज्ञान, अनुभव और नैतिकता का स्रोत माना गया है। परिवार, समाज की एक छोटी किंतु महत्वपूर्ण इकाई है। सक्षम एवं समर्थ वृद्धों के अनुभव और मार्गदर्शन के कारण वे न केवल परिवार के संरक्षक होते हैं, बल्कि समाज के नैतिक पथप्रदर्शक भी माने जाते हैं।

किंतु बदलते सामाजिक परिवेश, गलाकाट प्रतिस्पर्धा, तीव्र शहरीकरण, एकल परिवारों की प्रवृत्ति और भौतिकतावादी दृष्टिकोण ने वृद्धों को समाज में बोझ समझने की प्रवृत्ति को जन्म दिया है। आज उनके प्रति उपेक्षा, तिरस्कार और संवेदनहीनता, परिवार और समाज दोनों में बढ़ती जा रही है। जब भारत 21वीं सदी में तकनीकी और आर्थिक प्रगति की ओर अग्रसर है, तब वृद्धजन कहीं पीछे छूटते जा रहे हैं। आज की युवा पीढ़ी यह भूल रही है कि वृद्ध बोझ नहीं होते; वे परंपरा और परिवर्तन के बीच सेतु होते हैं।

इस लेख में ज्ञानरंजन की बहुचर्चित कहानी 'पिता' में चित्रित वृद्ध पात्र के माध्यम से यही संदेश देने का अल्प प्रयास किया गया है। कहानीकार ने दो पीढ़ियों के बीच के वैचारिक मतभेदों को संघर्ष के रूप में नहीं, बल्कि एक भावनात्मक और आत्मीय रिश्ते के रूप में चित्रित किया है।

'पिता' कहानी में पिता-पुत्र के संबंधों की वास्तविकता को गहराई से उकेरा गया है। उनके बीच व्याप्त मौन प्रेम, चिंता और भावनात्मक जुड़ाव की तस्वीर कहानी में अत्यंत सहज ढंग से खींची गई है। कहानी में कहीं भी उनके संबंधों में कटुता नहीं दिखाई देती।

साठोत्तरी युग के समाज, परिवार और पारिवारिक संबंधों का यथार्थ चित्रण इस कहानी में मिलता है। पिता और पुत्र के बीच पीढ़ीगत अंतराल को लेखक ने अत्यंत



संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। पुत्र अपने पिता को प्रसन्न करने के हर संभव प्रयास करता है, परंतु विफल रहता है, क्योंकि पिता अपने पुराने विचारों और जीवन मूल्यों पर अडिग हैं, वहीं पुत्र आधुनिक सोच से जुड़ा है।

इस वैचारिक दूरी और द्वंद्व के बावजूद दोनों के बीच व्याप्त समझदारी, प्रेम और अपनापन कहानी को एक मानवीय ऊंचाई प्रदान करता है। यह कहानी यह भी सिखाती है कि पारिवारिक संबंध सिर्फ मतैक्य से नहीं, बल्कि भावात्मक जुड़ाव और पारस्परिक सम्मान से टिके रहते हैं।

1. अनुभव और मार्गदर्शन का भंडार:

"यत्र पूज्यन्ते वृद्धाः तत्र रम्यं सदा गृहम्।"

अर्थात, जहाँ वृद्धों का सम्मान होता है, वहाँ घर सदा सुखमय और रमणीय बना रहता है।

वृद्धजन अपने जीवन के व्यापक अनुभवों के आधार पर नई पीढ़ी को सही दिशा दे सकते हैं।

हमें सदैव स्मरण रखना चाहिए कि वे पारिवारिक संकटों, सामाजिक उलझनों और नैतिक द्वंद्वों को सुलझाने में समर्थ होते हैं। इसका अत्यंत सुंदर और यथार्थ चित्रण सुप्रसिद्ध कथाकार ज्ञानरंजन की बहुचर्चित कहानी 'पिता' में मिलता है। इस कहानी में पुत्र अपने जीवन भर संघर्ष करते आए पिता को आराम और सुख देना चाहता है। एक प्रसंग में वह सोचता है -

"जब वह घूम-फिरकर पिता अपना बिस्तर बाहर लगाकर बैठते थे... सब लोग उन्हें भीतर, पंखे के नीचे सोने के लिए कहते हैं, पर वह ज़रा भी नहीं सुनते।" पृ.2

वह आगे झुंझलाते हुए कहता है -

"पता नहीं क्यों, पिता जीवन की अनिवार्य सुविधाओं से भी चिढ़ते हैं।" पृ.2

यह दृश्य दो पीढ़ियों की मानसिकता के भेद को उजागर करता है। जहाँ पुत्र के लिए पंखा और अन्य भौतिक सुविधाएँ जीवन की अनिवार्य आवश्यकताएँ हैं, वहीं पिता उन्हें अनावश्यक समझते हैं। यह विरोधाभास मात्र पीढ़ीगत मतभेद नहीं, बल्कि मूल जीवन-दर्शन का अंतर है।

'पिता' कहानी के पात्र उस साठोत्तरी और समकालीन युग के पिता का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सादगी, आत्मनिर्भरता और दिखावे से दूर रहने वाले मूल्यों में विश्वास

रखते हैं। वे कभी भी भौतिक प्रदर्शन या झूठे आडंबर के शिकार नहीं बनते, बल्कि अपने बच्चों को भी इससे बचने की सलाह देते हैं।

एक प्रसंग में, जब पुत्र पिता के लिए महंगे कपड़े किसी नामी दर्ज़ी से सिलवाने की सलाह देता है, तो पिता स्पष्ट रूप से कहते हैं -

"मैं सबको जानता हूँ। वही म्युनिसिपल मार्केट के छोटे-मोटे दर्जियों से काम कराते हैं और अपना लेबल लगा लेते हैं।" पृ.4

यह संवाद केवल साधारण नहीं है – यह आज के "आउटसोर्सिंग मॉडल" की ओर व्यंग्यात्मक संकेत करता है, जिसे लेखक ने सहज रूप से पिता के माध्यम से उजागर किया है।

संस्कृति के संवाहक: भारतीय परिवारों में परंपराएं और सांस्कृतिक मूल्य वृद्धजनों के माध्यम से ही आगे बढ़ते हैं। वे त्योहारों की गरिमा, संस्कारों की महता और पारिवारिक मूल्यों की व्याख्या करते हैं। वे सदैव अपनी सांस्कृतिक पहचान को नहीं भूलते हैं। अपनी परंपरा को जीवित रखने का हर संभव प्रयास करते हैं। अपनी पहचान और परंपरा को अपनाने में कभी नहीं झिझकते। वे अपनी जड़ून से कभी दूर नहीं होते हैं। किसी भी हालत में वे सुनिश्चित एवं नियमित जीवन पद्धति को अपनाते हैं। पिता के बारे में पुत्र सुधीर यूँ कहता है " लम्बे समय से वह केवल दो ही ग्रन्थ पढ़ते आ रहे हैं - यत्रवत, नियम्वत - रामायण और गीता. लम्बे पैंतीस वर्षों तक अखंड- केवल रामायण और गीता. ---- कोई व्यक्ति केवल दो पुस्तकों में ज़िन्दगी के पैंतीस वर्ष काट सकता है। " पृ.5 पुत्र अपने पिता को आधुनिक, मॉडर्न ड्रेस में देखना चाहता है। लकिन पिता इसके लिया तैयार नहीं हैं। इस लिए वे अपने पिता को लेखक के शब्दों में "लेकिन पिता की अड़ में कोई झोल नहीं आता. उलटा-सीधा, पता नहीं कहाँ किस दर्जी से कुरता-कमीज़ सिलवा लेते है. टेढ़ी जेब, सादरी के बैटन ऊपर-नीचे लगा, सभा-सोसाइटी में चले ज़ायेंगे।" पृ.3

परिवार एवं सामाजिक एकता के सूत्रधार: "वृद्धाः पूज्याः सर्वदा ग्रामे च नगरे च। यत्र वृद्धाः सन्ति, तत्र धर्मः स्थिरः भवति।" अर्थात जहाँ वृद्धों का सम्मान होता है, वहाँ धर्म की स्थिरता बनी रहती है।एक वृद्ध व्यक्ति परिवार को जोड़े रखने वाला धागा होता है। वे पीढ़ियों के बीच संवाद का माध्यम बनते हैं। उनका जीवन अत्यंत सरल होता है। वे कभी भी दिखावे की चपेट में नहीं आते।'पिता' कहानी में पिता बाहर सोते हैं। इसे देखकर बेटा उन्हें हठी समझता है, जबकि पिता अपने बहू-बेटियों के निजी जीवन को स्वच्छंद बनाए रखने के लिए अपना अधिकांश समय बाहर व्यतीत करते हैं।अर्थात, वे यही चाहते हैं कि उनके कारण बेटे के वैवाहिक जीवन में कोई विघ्न या बाधा न आए।



'पिता' कहानी का पुत्र अपने पिता को सम्मान देता है और उन्हें संसार की हर सुख-सुविधा प्रदान करना चाहता है।अत: वे अपने पिता से बड़े प्यार से कहता है- "मुहल्ले में हम लोगों का सम्मान है, चार भले लोग आया-जाया करते हैं, आपको अन्दर सोना चाहिए, ढंग के कपडे पहनने चाहिए, और चौकीदारों की तरह रात को पहरा देना बड़ा ही भद्दा लगता है।" पृ.3

वे यह भी चाहते है कि पिताजी आराम से पंखे के नीचे सोए, गुसलखाने में खूबसूरत शावर में स्नान करें, लड़के द्वारा लाई गई खाद्य सामग्री का स्वाद लें, दिल्ली एम्पोरियम की बढ़िया धोती पहने, किन्तु पिताजी को यह बातें कतई पसंद नहीं।'

भले ही उनके बच्चे कितने ही बड़े क्यों न हो जाएँ, माता-पिता के लिए वे हमेशा नादान बच्चे ही होते हैं। वे कभी अपने बच्चों पर बोझ नहीं बनना चाहते। यथासंभव अपना काम स्वयं करते हैं और यदि संभव हो तो अपने बच्चों और पोते-पोतियों के लिए भी सहारा और सहायता प्रदान करना चाहते हैं। यदि युवा पीढ़ी इसे समझती है तो वृद्धाश्रम को देखने की नौबत न पड़े।

वे न केवल अपने परिवार के बारे में सोचते हैं, बल्कि समाज और आसपास के लोगों का भी ध्यान रखते हैं। आपार्टमेंट संस्कृति और इस आधुनिक डिजिटल युग में ना तो पड़ोसियों की जानकारी होती है और ना ही साथ काम करने वालों की। पुराने समय में लोग एक ही कार्यालय में वर्षों तक काम करते थे, और सेवानिवृत्ति तक पहुँचने पर उन्हें अपने सहकर्मियों की गहरी जानकारी होती थी।

पैसों का कदर : आज के डिजिटल युग में लेन-देन और भुगतान का माध्यम अब मोबाइल बन गया है। ऐसे में आज की युवा पीढ़ी पैसे की कद्र करना भूलती जा रही है। हमें यह समझना आवश्यक है कि पैसे के बिना इस संसार में जीवन यापन करना असंभव है। इसलिए हमें न केवल पैसों की कद्र करनी चाहिए, बल्कि अपने भविष्य की चिंता करते हुए वर्तमान में विवेकपूर्ण ढंग से कार्य करना चाहिए।

अपने श्रम से अर्जित धन को सोच-समझकर और संभालकर रखना चाहिए, तभी हम आर्थिक तनाव से मुक्त हो सकते हैं। आवश्यक सुख-सुविधाओं के लिए खर्च करना स्वाभाविक है – इसमें कोई दो राय नहीं – परंतु वह खर्च भी संतुलन के साथ होना चाहिए। पुरानी पीढ़ी की यह विचारधारा है कि जीवन में आर्थिक सुरक्षा और आत्मनिर्भरता आवश्यक है। उनका मानना है कि यदि व्यक्ति आर्थिक रूप से मज़बूत होता है, तो वह स्वयं को अधिक सुरक्षित महसूस करता है।

ज्ञानरंजन की कहानी 'पिता' में चित्रित पात्र भले ही साठोत्तरी युग का प्रतिनिधित्व करते हों, फिर भी वे अपने बच्चों को पैसे की अहमियत समझाने में कोई कसर नहीं छोड़ते

हैं। यथा: " चौक से जाते वक्त चार आने की जगह तीन आने और तीन आनी में तैयार होने पर, दो आने में चलनेवाले रिक्शे के लिए पिता घंटे- घंटे खड़े रहेंगे." पृ.2 बच्चों को पैसों के महत्व, बचत और संचयन की शिक्षा देना अत्यंत आवश्यक है। साथ ही, उन्हें यह समझाना भी हमारा कर्तव्य है कि बचत के नाम पर कंजूसी नहीं करनी चाहिए, बल्कि विवेकपूर्ण ढंग से धन का उपयोग करना चाहिए। अनावश्यक क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड अथवा गूगल पे जैसे माध्यमों के अत्यधिक प्रयोग से बचना चाहिए।

2. बच्चों के विषय में हस्तक्षेप न करना: आजकल के वृद्ध भले ही अपने बच्चों के विचारों से असहमत हों, फिर भी वे अपने विचार उन पर थोपते नहीं हैं। वे केवल यही चाहते हैं कि बच्चे यह बात अच्छी तरह समझें कि माता-पिता सदा अपने बच्चों के कल्याण के बारे में ही सोचते हैं। 'जियो और जीने दो' – यही उनकी जीवन-दृष्टि है। लोगों के बोलने पर पिता कह देते हैं, "आप लोग जाइए न भाई, कॉफी हाउस में बैठिए, झूठी वैनिटी के लिए बेयरा को टिप दीजिए, रहमान के यहाँ डेढ़ रुपएवाला बाल कटाइए, मुझे क्यों घसीटते हैं!" पृ.4 आज की युवा पीढी से यही अपेक्षा की जाती है कि वे अपने माता-पिता के योगदान और त्याग को समझें और अपने माता-पिता को स्नेहपूर्वक अपने साथ रखें।

आत्म निर्भर व स्वाभिमानी: मुख्य पात्र 'पिता', जो पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं, अत्यंत स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर हैं। आम तौर पर हम देखते हैं कि पुरानी पीढ़ी के लोग अपने विश्वासों में अडिग रहते हैं। जो कुछ भी उनके पास है, उसी में वे संतुष्ट रहते हैं। उनके विचारों में बदलाव लाना लगभग नामुमकिन होता है। वे वही करते हैं जो वे सही समझते हैं। 'लोग क्या सोचेंगे' – ऐसी सोच रखने वाली युवा पीढ़ी, जो केवल बाहरी आडंबर को ही सच और सही मानती है, इस आत्मविश्वास और आंतरिक शांति के विचार को समझ नहीं पाती।

उनके लिए यह समझना कठिन है कि यह जीवन औरों के लिए नहीं, बल्कि हमारा है, और हमें इसे अपने लिए जीना है। मेरे पास जो कुछ भी है, वह मेरे लिए पर्याप्त है। इसके लिए हमें सदा ईश्वर का आभार प्रकट करना चाहिए। उनका मानना है कि यदि केवल फैशन के लिए ही जीना है, तो यह याद रखना चाहिए कि फैशन तो निरंतर बदलता रहता है। हमें जो कुछ भी अच्छा प्राप्त हुआ है, उसी में संतोष रखकर अपने जीवन को जीना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी-अपनी खूबियाँ होती हैं – मछली पानी में तैर सकती है, तो चीता ज़मीन पर दौड़ सकता है। आवश्यक है कि हर कोई अपनी ताकत और विशेषता को पहचाने।

सृष्टि ने सभी को किसी-न-किसी रूप में समान रूप से सामर्थ्य प्रदान किया है। किसी में लिखने की क्षमता होती है, तो किसी में बोलने की। सृष्टि की दृष्टि में सभी व्यक्ति समान और सम्मान के पात्र हैं – यही जीवन का गूढ़ रहस्य है। यदि हम इस



सच्चाई को स्वीकार कर लें, तो अपने जीवन में सफलता की ओर बढ़ना सहज हो जाता है। पुरानी पीढ़ी का यह विश्वास और जीवन के प्रति उनकी धारणा वास्तव में अत्यंत सराहनीय और अनुकरणीय है। युवा पीढ़ी को इसे समझना अत्यंत आवश्यक है। नित प्रतिदिन हमें बाज़ार में बेहतर से बेहतरीन वस्तुएँ मिलती हैं, पर यदि हम आधुनिकता और नवीनता की दौड़ में हर महीने नया मोबाइल, बाइक आदि खरीदने लगें, तो यह सिलसिला कभी समाप्त नहीं होगा। यह कोई बुद्धिमानी नहीं है, बल्कि संसाधनों की अनावश्यक बर्बादी है।

पुरानी पीढ़ी के लोग एक नियमित और सरल जीवन जीते हैं। ज्ञानरंजन की कहानी 'पिता' के माध्यम से लेखक इस जीवनदृष्टि को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करते हैं। कहानी में पिता कभी भी बाज़ार से लाए गए महंगे बिस्कुट या फलों को नहीं चाहते। उन्हें सादगीपूर्ण जीवन अधिक प्रिय है। लेखक के शब्दों में "अपनी अमावट, गजक और दाल रोटी के अलावा दूसरों द्वारा लाई चीज़ों की श्रेष्ठता से वह कभी प्रभावित नहीं होते. वह अपना हाथ-पाँव जानते हैं. अपना अर्जन, और उसी में उन्हें संतोष है." पृ3

निष्कर्ष : उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि पिता अपने बच्चों को आधुनिक बनने से नहीं रोकते, किंतु स्वयं उसमें शामिल नहीं होते; वहीं पुत्र अपने पिता को आधुनिक बनाना चाहता है।

यह कहानी पिता और पुत्र के मध्य दूरी के बावजूद दोनों एक-दूसरे का ख़्याल रखते हैं।

वे एक साथ रहते हैं, परंतु भीतर से एक जैसे नहीं हो पाते। यह विडंबना उस समय में भी प्रासंगिक थी और आज के समकालीन समाज में भी बनी हुई है। हमें यह समझना चाहिए कि वृद्धजन समाज और परिवार की मूल जड़ें होते हैं। वे केवल एक पीढ़ी के सदस्य नहीं, बल्कि परिवार की आत्मा होते हैं। यदि इन जड़ों को पोषण नहीं मिलेगा तो समाज की वृक्ष-रूपी संरचना डगमगा जाएगी।बदलते समाज में उनकी भूमिका को पुनः प्रतिष्ठित करना न केवल एक नैतिक उत्तरदायित्व है, बल्कि एक सांस्कृतिक आवश्यकता भी है। हमें एक ऐसे समाज की परिकल्पना करनी होगी जहाँ वृद्ध बोझ नहीं, वरदान माने जाएँ।

**सन्दर्भ:**

1. 'पिता'कहानी https://r.search.yahoo.com/_ylt=Awrx.UKR0X1oGBs3WEbnHgx.;_ylu=Y29sbwMEcG9zAzUEdnRpZAMEc2VjA3Ny/RV=2/RE=1753104913/RO=10/RU=https%3a%2f%2fkafaltree.com%2fpita-story-by-gyanranjan%2f/RK=2/RS=i8m8sthgDXDWKzr37wnGCH_6LiM-

2. https://r.search.yahoo.com/_ylt=Awrx.UKR0X1oGBs3VkbnHgx.;_ylu=Y29s-bwMEcG9zAzMEdnRpZAMEc2VjA3Ny/RV=2/RE=1753104913/RO=10/RU=https%3a%2f%2fsahityanazm.com%2fignou-study-material-pita-story-summary-review%2f/RK=2/RS=KSP7XWg5X6s22JBZ2eR2BO__GJo-

3. https://r.search.yahoo.com/_ylt=AwrPo8kO0n1opSU4OxvnHgx.;_ylu=Y29s-bwMEcG9zAzUEdnRpZAMEc2VjA3Ny/RV=2/RE=1753105039/RO=10/RU=https%3a%2f%2fhinditime005.blogspot.com%2f2017%2f11%2f-blog-post_16.html/RK=2/RS=GJWv_bcAzba9.C3_uOq99TO6CYE-

4. https://r.search.yahoo.com/_ylt=Awrx.UJB0n1oEtl34wXnHgx.;_ylu=Y29s-bwMEcG9zAzEEdnRpZAMEc2VjA3Ny/RV=2/RE=1753105089/RO=10/RU=https%3a%2f%2fwww.hindwi.org%2fstory%2fpita-gyanranjan-story/RK=2/RS=DWAIB5DxXXpDIb48_gG5ohN0PLQ-

5. https://r.search.yahoo.com/_ylt=Awrx.UJB0n1oEtl35gXnHgx.;_ylu=Y29s-bwMEcG9zAzQEdnRpZAMEc2VjA3Ny/RV=2/RE=1753105089/RO=10/RU=https%3a%2f%2fwww.hindikunj.com%2f2024%2f04%2fpita-kahani-ki-samiksha-gyanranjan.html/RK=2/RS=8cFFp7sBIb9b.EPHci0B-yVfmUWw-